भारतीय राजनैतिक व्यवस्था का चौथा स्तंम्भ मीडिया

डॉ. सुनीता त्रिपाठी
प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

वर्तमान समय मे मीडिया ने पूरे विश्व को जोड़ रखा है। मीडिया की विशेषता पारस्परिकता है। इसमें स्वतंत्रता अंतर्निहित है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंम्भ माना जाता है। भारत देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों में वर्णित है। भारत में मीडिया अभी विकासोन्मुखी चरण में है, और देश में इसके अच्छे प्रभाव को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। अभिव्यक्ति का यह सशक्त माध्यम है। आवश्यकता है इसका उपयोग जनहित, समाज सुरक्षा, नयी नयी जानकारी और शोध कार्यों में करें । राजनीति में सत्ताधारी वर्ग इस माध्यम का दुरुपयोग न करें बल्कि इसका प्रयोग इस तरह करें कि जो भारत देश की लोकतंत्रीय व्यवस्था के अनुकूल हो।

मुख्य शब्द - स्तम्भ, मीडिया, वैश्विक राष्ट्र।

देश के सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रशासनिक व राजनीतिक फलक पर घट रही घटनाओं तथा उस देश व समाज की वास्तविक स्थिति से आमजन का परिचय मीडिया के द्वारा ही करवाया जाता है। लोकतंत्र में व्यवस्थापिका कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद मीडिया को चौथा "स्तम्भ" माना गया है, क्योंकि देश दुनिया के हर कोने तक अपनी व्यापक पहुँच के चलते मीडिया देश व समाज के प्रति अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका व उत्तरदायित्व का निर्वाह भी करता हैं।

वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बढ़ते प्रोद्योगिकीय नवाचारों, अर्थव्यवस्था के उदारीकरण, सरकारी नियन्त्रण में कमी तथा निजी व विदेशी भागीदारी (मीडिया में) के रास्तें खोलती नवीन नीतियों ने भारतीय मीडिया का चेहरा पूरी तरह बदल दिया है। अखबार, टी.वी., रेडियो, फिल्मों, किताबों, पत्र-पत्रिकाओं, एफ. एम. रेडियो, निजी व सामुदायिक रेडियो, नित नये टी.वी. चैनलों के साथ-साथ डी.टी.एच., हिट्स कैस इत्यादि के बाद आई पी.टी. वी. तक मीडिया में शामिल हो गये है। इसी प्रकार कम्प्यूटर तथा इंटरनेट सम्पर्क में वृद्धि और मोबाईल टेबलेट जैसे प्रोद्योगिकीय नवाचारों ने नागरिक पत्रकारिता (सिटीजन जर्नलिज्म) ब्लोगिंग, ट्विटरिंग व फेसबुक जैसे सोशल मीडिया को जन्म देकर मीडिया के क्षेत्र में क्रांति ला दी है।

पारंपरिक मास मीडिया की तादाद और विविधता में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ नवीन संचार माध्यमों के उदय और प्रसार ने समाचार संकलन और उपयोग का स्वरूप पूर्णतया बदल दिया है और आम नागरिक को इस प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बना दिया है।

उत्तम और सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने वाले दूसरों की संवेदनाओं से खिलवाड़ करने वाले के बीच गोते लगाने वाले मास मीडिया ने जागरूकता द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न स्वरूपों से आम... अवगत करवाकर न केवल सर्वकल्याण निश्चित किया है बल्कि राजनीतिक व्यवस्था को भी समूल प्रभावित किया...

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को मीडिया ने सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया। ... सकारात्मक प्रतिरूपों में ऐतिहासिक भूमिका के साथ-साथ सुशासन आम आदमी के हित राष्ट्र के निर्माण, ... उजागर करने, जनसमस्या व जनमुद्दे उठाने, जनप्रतिनिधियों के संवाद सीमित करने, तथा चुनौतियों ... जनभागीदारी व जनमत निर्माण से संबंधित भूमिकाएं शामिल हैं।

वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में मीडिया के तमाम सकारात्मक प्रभावों को सर्वत्र देखा व महसूस कि... सकता है।

मीडिया ने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तथा भारत की स्वतंत्रता से लेकर उभरती हु... महाशक्ति बनने की वर्तमान स्थिति तक के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आजादी के दौरान अंग्रेज़... व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं ने अपने चिन्तन व विमर्श के द्वारा राजनैतिक क्रांति के लिए ... तैयार कर दी थी। इनमें ''इन्डेपेन्डेन्स'' (पं. मोतीलाल नेहरू) 'सोशलिस्ट' (एस. ए. डांगे) हिन्दुतान... (सच्चिदानंद) तथा 'इंडियन रिव्यू (जी. ए. नेट्सन) आदि प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ शामिल हैं। आजाद भारत में ... वैचारिक भावभूमि बनाने तथा बाहरी दुनिया से सम्पर्क और दूसरे देशों की विचारधाराओं से संबंध, मीडिया ... ही सम्भव हो पाया। स्वाधीनता संघर्ष के कई योद्धा तथा स्वतंत्र भारत को आगे बढ़ाने वाले कई पुरोधा स्व... ही थे, उदाहरणार्थ महात्मा गांधी लोक मान्य तिलक आदि।

आज तमाम वैश्विक राष्ट्रों की राजनीतिक व्यवस्थाएँ एक दूसरे से अतिघनिष्टता से जुड़ी हुई है, ... दूसरे को गहरे से प्रभावित कर रही है। संसार के सबसे पुराने व आधुनिक जीवन्त लोकतंत्र अमेरिका में हु... चुनाव के तुरन्त बाद बराक ओबामा ने ट्विट किया (@Brackobma) ''दिस हैपन्ड बिकॉज ऑफ यू थैं...

''फोर मोर ईयर्स''

बराक ओबामा के इस ट्विट को पूरी दुनियावासियों ने पढ़ा तथा समझा कि अपनी तमाम ... नीतियों व बेहतर राजनैतिक क्षमताओं के चलते बराक ओबामा पुनः अमेरिका के अमेरिका के राष्ट्रपति ... स्पष्ट है कि यह मीडिया के कारण ही संभव हो पाया है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एक स्तम्भ चुनाव है जिसके द्वारा राजनीतिक व्यवस्था का गठन होता... के दौरान मीडिया में आई तमाम खबरों व सूचनाओं से जनमत निर्माण में अत्यन्त सहायता मिलती है। मी... सक्रियता द्वारा आम मतदाता के व्यवहार को परिवर्तित कर उसे मतदान के लिए न केवल तैयार करता है ब... भागीदारी के लिए भी उकसाता है। इस प्रकार साफ-सुथरे व निष्पक्ष चुनाव में मीडिया की... असंदिग्ध है।

जनसमस्याओ व आमजन से जुड़े मुद्दों को अपनी खबरों में स्थान देकर मीडिया स्थानीय समस्याओं को उजागर करता है तथा जन संवेदनाओं के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया जताकर समस्याओं के व्यवहारिक समाधान को अंजाम तक पहुँचाता है।

आम आदमी का राजनीति से परिचय व जुड़ाव मीडिया में प्रसारित जानकारी द्वारा ही संभव होता है। आम आदमी को शिक्षा के लिए प्रेरित करके परिपक्व नागरिक बनाता है। मीडिया उनकी इच्छाओं व विचारों को जानकर गहराई से समझता है तथा वांछित भावनाओं को जगाता है। आम आदमी को जागरूक करके उसकी सोई हुई चेतना को जगाकर खतरे से आगाह करता है। "जनवाणी" के रूप में कार्य करते हुए जनसामान्य के लिए राजनीति में अवसरों को खोजने का कार्य भी मीडिया द्वारा ही किया जाता है।

राष्ट्र निर्माण करने हेतु मीडिया उच्च मूल्यों को स्थापित कर राष्ट्रीय एकता व भावनात्मक एकता को बढ़ावा देता है। वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की ज्वलंत समस्या आंतरिक सुरक्षा से संबंधित मुद्दो पर मीडिया की सक्रियता सदैव प्रशंसनीय है जन प्रतिनिधियों को आमजन करने का महान कार्य भी मीडिया द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों व परियोजनाओं की सफलता तथा प्रति जनता की प्रतिक्रियाओं से सरकार व जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाकर वांछित सुधार करवाने का कार्य भी मीडिया ही करता है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के वर्तमान ढाँचे में सुशासन की स्थापना करने में मीडिया के निष्पक्ष व तटस्थ भाव का अतुलनीय योगदान काबिल-ए-तारीफ है। राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता व उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना लोकतंत्र को संभावित खतरों से बचाता है तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं को जीवन्तता प्रदान करके राजनीतिक व्यवस्था के तीनों स्तम्भों की रखवाली करना मीडिया के ही कार्यो में शुमार है। आमजन के लिए रामवाण अथियार "सूचना का अधिकार" सिद्धान्तों की पोटली से वास्तविकता के धरातल पर उतर आया है। इस वास्तविकता के पीछे मीडिया का बड़ा हाथ रहा है। प्रशासन, राजनीतिक व्यवस्था व आमजन के मध्य संवाद की स्थापना में मीडिया अपना अमूल्य योगदान करता है। टेली (विडियो) कॉन्फ्रेन्शिंग व सोशल मीडिया जैसे द्विमार्गी संवाद सम्पर्कों के द्वारा सिविल सोसायटी के विचारों व फीडबैंक से व्यवसायी व प्रशासन को अवगत कराकर प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माण में सहायता करता है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में विधायिका को कई संवैधानिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं तब विधायिका के कार्यों को मूल्यॉकन तटस्थ व निष्पक्ष मीडिया द्वारा ही किया जाता है। सदन की कार्यवाही सदस्यों की भूमिका, सदन में पूछे गये प्रश्नों व उनके उत्तरों तथा जनहित कार्यो को जनप्रतिनिधियों द्वारा सदन में दिये गए महत्व इत्यादि से संबंधित पल-पल की खबरें जनता तक मीडिया द्वारा पहुँचाई जाती है। राजनीतिक कार्यक्रमों की व जनहित परियोजनाओं व योजनाओं के प्रचार-प्रसार द्वारा मीडिया जानकारी का फैलाव जनसामान्य तक करता है। नीति निर्माण व क्रियान्वयन में सरकारी मशीनरी के साथ जनता गैर-सरकारी संगठन, स्वयंसेवी संस्थाएँ, बुद्धिजीवी व विशेषज्ञों की भागीदारी का सुनिश्चयन मीडिया द्वारा ही संभव होता है। विभिन्न राजनीतिक दलों के विरोधी या समर्थक दृष्टिकोण का पता भी आम जनता व सरकार का मीडिया के मार्फत ही चलता है।

सिक्के के दो पहलुओं की तरह मीडिया का भी एक अन्य रूप मौजूद है। जो वर्तमान भारतीय राजनीति व्यवस्थाओं को सुधार की बजाए पतन की ओर अग्रसर कर रहा है। किसी उम्मीदवार व दल विशेष रूप में प्रस्तु करने हेतु पैसे लेकर प्रचार सामग्री को खबरों की तरह छापकर मीडिया जिस घिनौनी करतूत को अंजाम देता है उ "पेड-न्यूज" के नाम से जाना जाता है। चुनावों के दौरान झूठे सर्वेक्षण द्वारा दल विशेष की जीत से संबंधित गल आंकलन का प्रयोग करना मीडिया का एक अन्य नकारात्मक स्वरूप है। उदारीकरण निजीकरण व भूमंडलीकरण इस वर्तमान दौर में मीडिया के चरित्र में कई बदलाव आए है। बढ़ते निजीकरण विदेशी निवेश के फलस्वरूप मीडि लाभ निर्देशित गतिविधियों में शामिल हो रहा है। इन सब निराशाओं के चलते मीडिया की निष्पक्षता व पारदर्शि निरन्तर कम होती जा रही है। "पेड-न्यूज" के बाद "डेड-न्यूज" भी हाल में खबरों में रहा। जब जो -न्यूज के संपाद द्वारा नवीन जिंदल की कम्पनियों को कोल-ब्लॉक आवंटन संबंधित घोटाले की खबरों को पैसा लेकर प्रसारित क करने संबंधित मामला प्रकाश में आया। विभिन्न मीडिया समूहों पर कॉर्पोरेट घरानों के नियन्त्रण, राजनीतिज्ञों व प्रशासन के अवैध गठजोड़ की भ्रष्ट गतिविधियों के कारण मीडिया की तटस्थता व निष्पक्षता गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। फल लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की भूमिका के ईमानदारीपूर्ण निर्वाह में मीडिया कमजोर रहा है।

यदि मीडिया के सकारात्मक प्रभावों का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था द्वारा समग्र संतुलित व बुद्धिमतापू उपयोग किया जाए तो यह आज की लोकतंत्रात्मक प्रणाली के लिए वरदान सावित हो सकता है।

सन्दर्भ :-

1. योजना -मई 2009, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली।
2. संपादकीय राज, पत्रिका, दिनांक 30.10.2012।
3. लोक प्रशासन भारतीय लोक प्रशासन संस्थान नई दिल्ली जनवरी जून 2010 तथा जुलाई-दिसम्बर 2011
4. जनमाध्यम प्रोद्योगिकी और विचारधारा जगदीश चतुर्वेदी अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. इंडियन पॉलिटिकल सिस्टम एम. पी. सिह और हिमाशु राय-2005 जैन बुक डिपो कनॉट पैलेस, नई दिल्ली

❖ ❖ ❖